

संपादकीय

‘शोधामृत’ का यह प्रथम अंक, प्रवेशांक के रूप आप सभी विद्वत जनों के समक्ष प्रस्तुत है। यह पूर्णतः उच्च शिक्षा और शोध को समर्पित ऑनलाइन शोध पत्रिका है। यह उच्च शिक्षा में होने वाले नवीन शोध और अनुसंधान को पाठकों, शोधार्थियों और विद्वत विषय विशेषज्ञ प्राध्यापकों के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास है। साथ ही शोध-पत्र/शोधालेख प्रकाशन के क्षेत्र में हावी बाजारवाद को कम करने का एक छोटा सा प्रयास भी है। ‘शोधामृत’ अंग्रेजी, हिंदी और संस्कृत भाषा में कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान के अंतर्गत आनेवाले विषयों से संबंधित शोध-पत्र/शोधालेख की अर्धवार्षिक शोध पत्रिका है। ‘शोधामृत’ में शोध-पत्र/शोधालेख प्रकाशन में सहकर्मी समीक्षा और मूल्यांकन प्रक्रिया का पालन किया जाता है इसलिए यह एक सहकर्मी समीक्षित और मूल्यांकित शोध पत्रिका है।

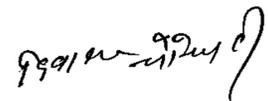
‘शोधामृत’ (ऑनलाइन-अर्धवार्षिक शोध पत्रिका) का प्रकाशन जनवरी-जून 2024 (प्रवेशांक) से प्रारम्भ किया जा रहा है। वर्तमान में इसका स्वरूप ऑनलाइन रखा गया है, किन्तु, भविष्य में यह आपके सम्मुख ऑनलाइन और प्रिंट, दोनों माध्यमों में उपलब्ध होगी। साथ ही हमारा प्रयास है कि इसे पूर्णतः निःशुल्क प्रकाशित किया जाए और श्रेष्ठ शोध-पत्र/शोधालेख को ही स्थान दिया जाए। इसलिए इस में प्रकाशन हेतु मानक/मापदंड निर्धारित किये गए हैं। मेरी माँ स्व. पूनम देवी और पिताजी श्री राम नरेश चौधरी के आशीर्वाद और सहधर्मिणी श्रीमती अनुभा चौधरी के सहयोग और समर्थन से यह प्रयास आपके समक्ष ‘शोधामृत’ के रूप में प्रस्तुत हो सका है। सहधर्मिणी का इसलिए भी कि जो मेरे आलसीपन को दूर कर कर्मरत रहने हेतु प्रेरित करती रही है तथा जो भी थोड़ा कुछ आप विद्वतजनों के समक्ष प्रस्तुत हो सका वह उनके विश्वास के कारण ही संभव हो सका है।

इस पत्रिका के प्रकाशन की योजना जिन कुछ प्रमुख व्यक्तित्वों, गुरुजनों और विद्वत साथियों के आशीर्वाद और सहयोग से सफलभूत हो सकी, उनमें कुछ प्रमुख उल्लेखनीय नाम हैं-मेरी स्वर्गवासी माँ –स्व. पूनम देवी, पापा -श्री रामनरेश चौधरी, विद्वत गुरुजनों-डॉ. सतीश कुमार राय, सम्प्रति- प्राध्यापक एवं संकायाध्यक्ष-मानविकी, बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, डॉ. कल्याण कुमार झा, प्राध्यापक, विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग, बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, डॉ. दशरथ प्रजापति, प्राध्यापक एवं प्राचार्य, जगन्नाथ सिंह महाविद्यालय, चंदौली, सीतामढ़ी, डॉ. वीरेंद्र नाथ मिश्र, विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग, बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर और डॉ. रवीन्द्र उपाध्याय, पूर्व प्राध्यापक, विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग, बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, श्री विनोद कुमार झा (सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक), विद्वान और नई पीढ़ी के वरिष्ठ, मित्रवत डॉ. गुलाब सिंह, सहायक प्राध्यापक सह अध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, श्री राधा कृष्ण गोयनका महाविद्यालय, सीतामढ़ी तथा विद्वान् साथियों- डॉ. आरले श्रीकांत लक्ष्मणराव, सहायक प्राध्यापक-हिन्दी विभाग, ओडिशा केंद्रीय विश्वविद्यालय, कोरापुट, डॉ. उमेश कुमार शर्मा, सहायक प्राध्यापक सह अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, श्री राधा कृष्ण गोयनका महाविद्यालय, सीतामढ़ी और श्रीमती कंचन कुमारी, सहायक प्राध्यापक- हिन्दी विभाग, श्री राधा कृष्ण गोयनका महाविद्यालय, सीतामढ़ी, डॉ. राकेश कुमार, सहायक प्राध्यापक सह अध्यक्ष, इतिहास विभाग, श्री राधा कृष्ण गोयनका महाविद्यालय, सीतामढ़ी आदि का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

इस पत्रिका से संबद्ध सभी व्यक्ति इस पत्रिका के मानक और गरिमा को बनाए रखते हुए निरंतर प्रकाशन हेतु दृढ़ संकल्पित हैं। इस पत्रिका में सिर्फ शोधालेख प्रकाशित हो सकता है। साथ ही हमारा प्रयास होगा कि इस पत्रिका के माध्यम से लोकहित, समसामयिक, सांस्कृतिक और वर्तमान संदर्भों में प्रासंगिक शोध-पत्र/शोधालेख के लेखन और प्रकाशन को और बढ़ावा मिल सके।

मुझे विश्वास है कि ‘शोधामृत’ (ऑनलाइन-अर्धवार्षिक शोध पत्रिका) को प्रकाशित करने का हमारा यह प्रयास आपको अवश्य पसंद आएगा। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आप सभी विद्वतजनों के सहयोग, समर्थन और परामर्श से ‘शोधामृत’ शोध पत्रिका उच्च शिक्षा और शोध-पत्र प्रकाशन के क्षेत्र में यथाशक्ति/यथोचित योगदान देते हुए अपना विशेष स्थान बना सकेगी। कुछ कमी/त्रुटी रह गयी हो, स्वाभाविक है, तथापि मेरी कोशिश होगी कि आप सबों की अपेक्षाओं पर खरा उतर सकूँ। आपके सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी। आशा है आप सभी विद्वतजनों का स्नेह हमें निरंतर प्राप्त होगा।

और अंत में, सिर्फ इतना ही कि इस पत्रिका के प्रकाशन में जिनका भी प्रत्यक्ष या परोक्ष योगदान रहा है, उन सभी विद्वतजनों को धन्यवाद, साधुवाद। इस पत्रिका में जो भी अच्छा है, उसका श्रेय आप सभी गुरुजनों, सुधी पाठकों और विद्वतजनों का है और जो कुछ भी त्रुटी रह गई है उसकी जिम्मेदारी मेरे ऊपर है। अस्तु। इति शुभम्।



डॉ. दिवाकर चौधरी
प्रधान संपादक